शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 जुलाई 2013

# भारतीय परिदृश्य में महिला कृषि श्रमिकों के क्रियाकलाप एवं समस्याएं

संजना वर्मा (शोधार्थी)
अर्थशास्त्र विभाग
मुंशी रघुनंदन प्रसाद सरदार पटेल महिला महाविद्यालय,बाराबंकी(उ0प्र0)

## शोध संक्षेप

*महिला किसी भी राष्ट्र की भाग्य निर्मात्री होती है। वे अर्थव्यवस्था में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में महिलाएं कृषि व्यवस्था के केंद्र में हैं। वे एक प्रकार से ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। उनके कृषि में दिए जा रहे योगदान के समुचित मूल्यांकन के अभाव में वे समस्याओं से भी घिरी हुई हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में महिला कृषि श्रमिकों के क्रियाकलाप एवं समस्याओं पर विचार किया गया है।*

## प्रस्तावना

यद्यपि महिलाओं की प्राथमिक जिम्मेदारी घरेलू काम की है, लेकिन ग्रामीण परिवारों की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण महिला कृषि श्रमिक खेत पर पुरूषों के बराबर काम करके अपनी दोहरी भूमिका निभाती हैं। भारत में असंगठित क्षेत्र में लगे श्रमिक बल में महिला श्रमिकों का हिस्सा 90 प्रतिशत आकलित किया गया है।**1** जिसमें से 87 प्रतिशत ग्रामीण महिला श्रमिक कृषक या कृषि श्रमिक के रूप में कार्यरत हैं।**2** वर्तमान में भारत की 25 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रही है**3** और यह सत्य है कि गरीबी के कारण श्रम बल सहभागिता में वृद्धि होती है। कृषि संबन्धी गतिविधियों में लगी महिलाओं को अनेक ऐसे काम करने होते हैं, जो स्वास्थ्य की दृष्टि से जोखिम भरे होते हैं। रोपाई फसल कटाई, दवाई छिड़कना, सुखाई और ओसाई जैसे कृषि कार्यों में महिलाओं को काफी पसीना बहाना पड़ता है। इसके अलावा चारा कटाई बाड़ों और खलिहानों की साफ-सफाई पशुओं का दूध निकालने आदि कार्यों की अधिकांश जिम्मेदारी महिलाओं पर ही छोड़ दी जाती है। इन सभी कार्यों में महिलाएं बिना अपने स्वास्थ्य की परवाह किए लगी रहती हैं। जिसके कारण 23 से 67 प्रतिशत महिलाएं स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक समस्याओं का शिकार हो जाती हैं।**4**

महिला कृषि श्रमिकों के कठिन परिश्रम की न तो उन्हें कोई कीमत मिलती है और न ही उन्हें भलीभांति मान्यता दी जाती है। उनके कामों की कोई गिनती नहीं होती। वे कृषि, पशुपालन और घर गृहस्थी में कमरतोड़ मेहनत करती हैं। ये काम वे प्रतिदिन करती हैं परन्तु उन्हें उन्हीं कार्यों के लिए पुरूषों की तुलना में कम मजदूरी दी जाती है। भूमि का मालिकाना अधिकार भी अधिकतर पुरूषों के नाम ही होता है। कृषि फसल उत्पादों की बिक्री आदि पुरुष ही करते हैं जिसके कारण घरेलू आमदनी पर उन्हीं का नियन्त्रण रहता है। काम की तलाश में पुरुषों के शहरों की ओर पलायन की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण कृषि और खेतों की अधिकांश जिम्मेदारी महिलाओं पर आ गई हैं, परंतु उन्हें कर्ज आसानी से नहीं

मिलता, क्योंकि पट्टे उनके नाम नहीं होते। भारत में 11 प्रतिशत महिलाओं के पास ही जमीन का कब्जा है, जिसमंे से ज्यादातर लघु और सीमान्त किसान हैं।5

शिक्षा और तकनीक के ज्ञान से वंचित महिला कृषकों पर हाल के वर्षो में अन्य अनेक सामाजिक आर्थिक कारकों का भी विपरीत प्रभाव पड़ा है। इच्छा और उत्सुकता के बावजूद वे प्रायः नयी तकनीक नवाचार और बाजार के अवसरों का उचित लाभ नहीं उठा पातीं। महिला श्रमिकों को कृषि में जिन अभावों और अवसरों का सामना करना पड़ता है वे देश की कृषि पारिस्थितिकी और भौगोलिक क्षेत्रों पर निर्भर होता है। अनेक नीतिगत सुधारों और बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप के बाद भी महिलाओं के अधिकारों और सम्मान पर जिस प्राथमिता से ध्यान दिया जाना चाहिए, वह नहीं हो सका है।

कृषि क्षेत्र में कार्यरत ग्रामीण महिला श्रमिकों की समस्याएं

कृषि गतिविधियों में महिला श्रमिकों के समक्ष अनेक समस्यायें उपस्थित होती हैं। इनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है-

**1** काम का अधिक भार - कृषि क्षेत्र में महिला की भूमिका के संबंध में संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार समस्त विश्व में कुल मिलाकर जितने घण्टे काम होता है उनमें से दो तिहाई घण्टे (अर्थात् लगभग 66 प्रतिशत) काम केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है। ग्रामीण महिलाएं सुबह अंधेरे से लेकर देर रात तक अनवरत रूप से काम में लगी रहती हैं। औरतें घर की देखरेख और घरेलू कामों के साथ ही पुरुषों की देखभाल, बागवानी एवं कृषि कार्य करती हैं। महिलाएं किसानों को केवल खेत पर खाना पहुंचाने तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि खेती-बाड़ी के मेहनत भरे कामों में भी पीछे नहीं रहतीं। खेत में बीज, खाद, निराई, गुड़ाई, फसल की कटाई सफाई सिंचाई आदि सभी क्रियाकलापों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कृषि कार्य में योगदान देने के साथ ही महिलाओं द्वारा गृहस्थी के भी अनेक काम किए जाते हैं, जैसे- घर का रखरखाव, पानी भरना, झाड़ू लगाना, कपड़े धोना, भोजन पकाना, बर्तन धोना, चूल्हा-चैका करना, लकड़ी व जलावन की व्यवस्था करना आदि। इसके साथ ही पशुओं के लिए चारे पानी की व्यवस्था करना, चारा डालना, नहलाना, दूध-निकालना, पशुशाला की सफाई आदि की दैनिक व्यवस्था में सुबह से शाम तक जूझती रहती हैं। ईंधन व पानी लाते हुए भी महिलाएं बच्चे को गोद में उठाए तथा बाकी को साथ लिए रहती हैं। बच्चों एवं परिवार के अन्य सदस्यों की जिम्मेदारी भी घर में महिलाओं की ही होती है। महिलाएं, पुरूषों की तुलना कहीं अधिक परेशानी उठाती हैं। वे अधिक मेहनत करती हैं फिर भी पुरुष प्रधान समाज उनकी उपेक्षा करता है तथा कृषि का सारा श्रेय अपने जिम्मे कर लेता है। यदि ग्रामीण महिलाओं के एक दिन के श्रम घण्टों की गणना की जाए तो पुरुषों के श्रम घंटों से ये कहीं अधिक बैठते हैं।

**2-** कम मजदूरी एवं उत्पादकता का निम्न स्तर - ग्रामीण असंगठित क्षेत्र में सामान्यतः कृषि क्षेत्र एवं इससे सम्बन्धित गतिविधियों छोटे उद्योगों में महिलाओं को कम आय प्राप्त होती है। एक ही तरह के कार्यों में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं को कम मजदूरी मिलती है। अपर्याप्त पोषण के कारण महिलाओं की कार्यक्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अतः कृषि क्षेत्र में महिला श्रमिकों की

उत्पादकता कम होने के कारण भी इन्हें कम मजदूरी प्राप्त होती है।

**3-** अपर्याप्त रोजगार अवसर - ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ परिवारों के पास भूमि का अधिक भाग एवं कुछ के पास कम भूमि होती है, जबकि कुछ परिवार भूमिहीन होते हैं। अतः कम भूमि या भूमिहीन होने के कारण महिलाएं दूसरे के खेतों पर जाकर कार्य करती हैं। भूमि मालिक किसी मौसम में खेत में फसल बोता है तो किसी में नहीं। इस प्रकार महिलाओं को पर्याप्त रोजगार नहीं मिल पाता है। कृषि क्षेत्र में रोजगार के अवसरों में सदैव ही अनिश्चितता बनी रहती है। महिलाओं को कृषि क्षेत्र में रोजगार एक वर्ष में केवल दो महीने के लिए ही मिल पाता है। उन्हें बोवाई के समय 10 से 15 दिन तथा प्रत्येक फसल की कटाई के समय 5 से 7 दिन ही रोजगार प्राप्त हो पाता है।

**4-** निम्न जीवन स्तर - गाँवों में अधिकतर परिवार गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करते हैं। इनको पर्याप्त रोजगार उपलब्ध नहीं होने के कारण जीवन स्तर निम्न रहता है। महिलाओं को अपर्याप्त पोषण एवं निम्न कार्यक्षमता के कारण पर्याप्त आय प्राप्त नहीं होती। फलस्वरूप इनका जीवन-स्तर निम्न रहता है।

**5-** वित्तीय समस्याएं - ग्रामीण महिलाओं के समक्ष अनेक आर्थिक एवं वित्तीय समस्याएं पैदा हो जाती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के पुरुष प्रधान समाज में महिलाएं अपनी इच्छा से कृषि यन्त्रों एवं उपकरणों में निवेश नहीं कर सकतीं। आय पर घर के मुखिया अर्थात् पुरुष वर्ग का प्रभुत्व होता है। माता-पिता अपनी भूमि में पुत्री को हिस्सा नहीं देते एवं ससुराल में भूमि पर स्वामित्व एवं नियन्त्रण महिला के पति या ससुर का होता है। महिला के पास मात्र गहने या स्त्रीधन होता है। स्त्रीधन पर भी महिला के पति या परिवार का पूरा नियन्त्रण होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकों से ऋण के लिए गहनों का अधिक प्रयोग किया जाता है। ऋण का भुगतान नहीं कर पाने पर गहनों पर बैंक का अधिकार हो जाता है। इस प्रकार स्त्रीधन पर भी महिला का नियन्त्रण नहीं रह पाता। साधारणतः भूमि का मालिक पुरुष होता है। जिससे वे वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भूमि का भी प्रयोग नहीं कर पाती हैं। अतः महिलाओं को घर एवं अन्य कार्यों पर व्यय के लिए पुरुषों पर ही निर्भर रहना पड़ता है।

**6-** स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं - महिलाओं का स्वास्थ्य स्तर सामान्यतः निम्न रहता है। ये घर के कार्यों, परिवार के सदस्यों की देखभाल एवं कृषि सम्बन्धी विभिन्न गतिविधियों में भूमिका निभाती हैं। जिसका प्रभाव इनके स्वास्थ्य पर पड़ता है। कम आयु में विवाह का सांस्कृतिक आग्रह, उच्च जनन क्षमता, माता एवं गृहिणी की भूमिका का आदर्शीकरण, महिला के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालते हैं। अधिकांश सर्वेक्षणों से विदित होता है कि महिलाएं पहले अपने परिवार को खाना खिलाती है और उसके बाद बचा-खुचा स्वयं खाती हैं। इसी कारण गरीब परिवारों की महिलाएं कुपोषण से अधिक प्रभावित रहती हैं अर्थात् अपर्याप्त भोजन एवं पोषक तत्वों के अभाव के कारण महिला श्रमिकों के सामने उनके स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं पैदा हो जाती हैं।

कृषि क्षेत्र में कार्यरत ग्रामीण महिलाएं सुबह जल्दी उठती हैं और रात में देर से सोती हैं। घर के कार्यों, बच्चों एवं अन्य सदस्यों की देखभाल, पशुओं सम्बन्धी कार्यों के अलावा कृषि कार्यों में अपनी भागीदारी निभाती हैं। महिलाएं पुरुषों की

अपेक्षा अधिक घण्टे कार्य करती हैं। जिससे उनके पास आराम का समय बहुत कम, या रहता ही नहीं है। महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा अधिक कठिन कार्य करती हैं, किन्तु इनके कार्य की पहचान नहीं होती। कार्य की अधिकता का महिला के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्र में रसोईघर की स्थिति बेहतर नहीं होती। गाँवों में रसोईघर हवादार नहीं होते हैं, किन्तु खाना पकाने हेतु गाँवों में मुफ्त लकड़ी, पशुमल तथा फसलों की डन्ठल का प्रयोग रसोईघर में घरेलू ईंधन के रूप में करते हैं। जिसका महिलाओं के स्वास्थ्य पर बहुत ही हानिकारक प्रभाव पड़ता है। चूल्हे में सुलगाने के क्रम से ही लगातार फूँक मारने की क्रिया प्रचुर मात्रा में की जाती है, जिससे फेफड़े प्रभावित होते हैं। चूल्हे से निकलने वाले धुएं के कारण आंखें रोगग्रस्त होती हैं अर्थात् ग्रामीण क्षेत्र में परम्परागत चूल्हा ग्रामीण महिलाओं के लिए समस्याओं की खान एवं ग्रामीण पर्यावरण को दूषित करने का प्रबल साधन है। महिलाओं के दैनिक कार्य, परिस्थितियों के कारण इतने जटिल होते हैं कि विपरीत परिस्थितियों जैसे-खराब स्वास्थ्य, गर्भावस्था एवं प्रसवकाल में भी वे आराम नहीं कर पाती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाएं भी समुचित मात्रा में उपलब्ध नहीं है। साथ ही योग्य चिकित्सकों का अभाव एवं चिकित्सालयों में स्वास्थ्य परीक्षण की सुविधाओं का तो सदैव ही अभाव रहता है। गर्भावस्था के दौरान भी अपर्याप्त एवं पौष्टिक भोजन के न मिलने के कारण इनमें एनीमिया की समस्या अधिकतर पायी ही जाती है। महिलाओं द्वारा किए गए कृषि कार्यों में आकस्मिक दुर्घटना का अवसर भी बना रहता है। कृषि क्षेत्र में कार्य की स्थिति बहुत कठिन होती है। महिलाएं कृषि सम्बन्धी कार्यों में खुली जगह, बरसात, सर्दी एवं गर्मी में कार्य करती हैं। कभी-कभी कृषि औजारों के कारण महिला श्रमिकों को अनेक शारीरिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। महिलाएं कृषि क्षेत्र में पुरुषों की अपेक्षा अधिक कार्य नहीं करती हैं, बल्कि अधिक परिश्रम वाले काम करती हैं। कृषि में निराई कार्य में महिलाएं पूरे दिन काम करती हैं। महिलाएं तेज धूप में कार्य करतीं हैं। कृषिगत् क्रियाकलापों में निराई से हाथों एवं पैरों में परेशानी होती है। त्वचा का सूखापन, श्वास सम्बन्धी समस्याएं फेफड़ों में धूल-मिट्टी का संचय, फेफड़ों की सूजन, दमा आदि समस्याएं जन्म लेती है। कृषि में पौधों पर छिड़के गए रासायनिकों से महिलाओं में चक्कर आना, जी मिचलाना एवं उल्टी सम्बन्धी परेशानियां होती हैं।6 कृषि क्षेत्र के विभिन्न कार्यों में सबसे कठिन कार्य निराई है, जिसका अधिकतर कार्य महिलाओं द्वारा पूरे दिन किया जाता है। जिसके परिणामस्वरूप उनमें कमर-दर्द, हाथ-पैर दर्द, सिर-दर्द, बुखार, थकान, एड़ी एवं पेट दर्द, अंगुलियों का छिलना एवं कटना, खरोंच एवं हाथों में छाले हो जाते हैं। महिलाएं पूरे वर्ष सभी मौसमों में काम करती रहती हैं। जिसके परिणामस्वरूप अत्यधिक थकान, पसीना आना, बुखार, जुकाम, लू-लगना सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कटाई के समय अंगुलियों का छिलना एवं कटना, खरोंच एवं मिट्टी के कारण दानें एवं फुन्सी सम्बन्धी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। महिलाओं को थकान सम्बन्धी समस्याएं घर से खेत की दूरी की अधिकता के कारण भी उत्पन्न होती है। अतः उपर्युक्त कारणों

से लगभग 23 से 67 प्रतिशत महिलाएं स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक समस्याओं का शिकार हो जाती हैं।**7**

**7-** तकनीकी समस्याएं - महिला श्रमिकों को कृषि क्षेत्र में अनेक तकनीकी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। महिलाओं में बड़े भू-भाग की गुणवत्ता, कृषियन्त्रों के उपयोग, बीजों की नई किस्में, फसलों की बीमारियों की पहचान, कृषि उपकरणों एवं मशीनों के ज्ञान एवं कौशल का अभाव पाया जाता है। इनके साथ-साथ प्राथमिक चिकित्सा सुविधाओं, बैंक एवं साख सुविधाएं बीजों की प्राप्ति, खाद एवं उर्वरक की गुणवतत्ता, कृमिहत्या बीमारियों का उपचार सम्बन्धी ज्ञान महिलाओं को नहीं होता। पिछले दो दशकों से कृषि में मशीनीकरण में प्रगति हुई है। किन्तु विडम्बना यह है कि जो कार्य महिलाएं करती हैं, उनमें नई तकनीकें नहीं लागू की जा रही हैं। पुरुष कृषि श्रमिक जहां आधुनिक यंत्रों तथा नई तकनीकों को अपनाकर कम श्रम से अधिक काम कर रहे हैं, वहीं महिला कृषि श्रमिक आज भी स्थानीय तरीकों तथा परम्परागत औजारों का प्रयोग करती हैं, जो न केवल उन्हें थका देते हैं, बल्कि इससे उनकी कार्यक्षमता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यही नहीं जो उपकरण तैयार किए जाते हैं, उनके डिजाइन बनाते समय महिलाओं की विशेष जरूरतों को ध्यान में नहीं रखा जाता है। शारीरिक संरचना अलग होने के कारण उपकरणों के प्रयोग का महिला श्रमिकों का अलग तरीका होता है। इसके अतिरिक्त महिला कृषि श्रमिक बच्चों को साथ लेकर भी काम करती हैं।

**8-** सामाजिक**,** पारम्परिक एवं सांस्कृतिक बाधाएं - संयुक्त परिवार, पर्दा प्रथा, शराब के चलन एवं अन्य सामाजिक एवं पारम्परिक बाधाओं से महिलाएं सबसे अधिक प्रभावित होती हैं। देश के विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। किन्तु ग्रामीण क्षेत्र में पुरुषों की तुलना में महिलाओं में साक्षरता दर बहुत कम रहती है। जिसका कृषि की उत्पादकता एवं आय पर प्रभाव पड़ता है। सामाजिक बुराइयों का प्रतिफल महिलाओं को ही भोगना पड़ता है। गाँवों में पर्दाप्रथा का महिलाओं की कार्य-क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। पर्दे के कारण महिलाओं को अनेक समस्याओं जैसे- काम करने में परेशानी, पुरुषों के सामने खाना नहीं खाना, रास्ते में पुरुषों के मिलने पर रुककर उन्हें जाने के लिए रास्ता देना आदि का सामना करना पड़ता है। इस तरह पर्दाप्रथा का प्रभाव महिलाओं की निर्णय क्षमता को भी प्रभावित करता है। समाज में महिलाओं की बातें कम सुनी जाती हैं। ग्रामीण क्षेत्र में समाजिक बुराइयों के कारण महिलाओं की स्वतंत्रता में कमी देखी जा सकती है। ग्रामीण क्षेत्र में शराब का प्रचलन भी एक बड़ी बुराई है। मद्यपान के कारण न केवल पुरुषों का स्वास्थ्य ही खराब होता है, बल्कि सम्पूर्ण परिवार की आर्थिक स्थिति पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। पुरुष शराब पीकर परिवार के सदस्यों एवं पत्नी के साथ गाली-गलोच मारपीट एवं बहस करने जैसी समस्याएं उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार सामाजिक बुराइयों का अधिक बुरा प्रभाव महिलाओं को ही भोगना पड़ता है।**8**

**9-** पारिवारिक समस्याएं - परिवार के स्तर की मुख्य समस्या घरेलू क्रियाकलापों में श्रम का वितरण है। सामान्यतः महिलाएं पुरुषों की तुलना में बहुत अधिक कार्य करती हैं, लेकिन पुरुषों की तुलना में इन्हें आराम का समय बहुत ही कम

मिल पाता है। पोषक तत्वों की जानकारी के अभाव के कारण एवं आय के निम्न स्तर से इन्हें अपर्याप्त पोषण का शिकार होना पड़ता है। पारिवारिक स्तर पर महिला पर काम का अधिक भार, बच्चों एवं बड़ों की देखभाल तथा बड़े परिवार के बड़े आकर के कारण अनेक समस्याएं पैदा होती हैं। संयुक्त परिवार में औरतों के आपस के झगड़े, सास बहुओं के झगड़े, काम की अधिकता से तनाव सम्बन्धी समस्याएं होती हैं। परिवार में पति द्वारा शराब पीकर पत्नी के साथ गाली-गलौच, पिटाई, बच्चों की पिटाई, महिला की बात को महत्व न देना, बात-बात पर घर से निकालने की धमकी आदि का दुष्परिणाम महिलाओं के ही जिम्मे आता है।

**10-** महिलाओं के घरेलू कार्यों को राष्ट्रीय गणना में शामिल नहीं किया जाना - वर्तमान आर्थिक योगदान के आकलन सिद्धान्तों में किसी भी व्यक्ति द्वारा अपने घर पर किए गए कार्यों को आर्थिक आकलन के रूप में सम्मिलित नहीं किया जाता है। महिलाएं कृषि एवं गृह कार्यों में कई घण्टे कार्य करती हैं, किन्तु उनके घण्टों का कोई हिसाब नहीं लगाया जाता, इसलिए उनकी गणना सकल राष्ट्रीय उत्पाद में नहीं की जाती है अर्थात् महिला के घरेलू कार्यों को आर्थिक रूप से उत्पादक नहीं माना जाता है।9 किन्तु राष्ट्रीय उत्पाद में महिला द्वारा किए गए घरेलू कार्य एवं उत्पादकता बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**11 -** माँग क्षमता में कमी - ग्रामीण महिला कृषि श्रमिकों को निम्न कानूनी सुरक्षा प्राप्त होने के कारण वे आज भी पूर्णतः अपने कामों से उपेक्षित हैं। परिणामस्वरूप संगठित क्षेत्र के श्रमिकों की भांति उनकी माँगों का लाभ उन्हें नहीं मिल पाता है।

निष्कर्ष -

उपर्युक्त अध्ययन के पश्चात् निष्कर्षतः हमें यह पता चलता है कि महिला कृषि श्रमिकों को पुरुषों की तुलना में अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं के बावजूद भी महिला कृषि श्रमिक पूरी जिम्मेदारी के साथ अपनी दोहरी भूमिका निभाती हैं।

## सन्दर्भ

1 Gurusamy, *Human Rights and Gender Justice*, A.P.H. Publishing Corporation, New Delhi, 2009, pp.172.

2 A. Selva Kumar, *Plight of Unorganized Workers*, Discovery Publishing House, New Delhi, 009, pp.76.

3 http://www.thedora.com/wfbcurrent/india/india-economy.html. Accessed on 22/5/2012.

4 Maithreti Krishnaraj and Aruna Kanchi, *Women Farmers in India*, National Book Trust, India, (2008), pp.01

5 योजना, जून-2012, अंक-06, पृ011-12.

6http://new.nic.in/pdfreport/NationalTaskFordeonTechnological Empowerment.pdf, Accessed on 30/5/2012

7 योजना, जून-2012, अंक-06, पृ012.

8 C.Kalbagh, *Women in Agriculture and Rural Development*, Discovery Publishing House, New Delhi, pp.30.

9 Ishwar C. Dhingra, *The Indian Economy: Environment Policy*, Sultan Chand & Sons, New Delhi, 2006, pp.311.